Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी व्याकरण (अपठित गद्यांश)

पुस्तक- नीवा हिंदी व्याकरण-7

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम अपठित गद्यांश के विषय में पढ़ेंगे। सब बच्चे अपनी पुस्तक का पृष्ठ-174 खोलकर रखेंगे और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँगे। यह कार्य आपको 7 अक्तूबर को भेजा जा रहा है।

बच्चो! आपने अपठित गद्यांश अपनी पिछली कक्षाओं तथा पिछले सत्र में भी पढ़ चुके हैं। अब हम इसके बारे में पुनः पढ़ेंगे।

वह गद्यांश जो पहले पढ़ा हुआ नहीं होता, अपठित गद्यांश कहलाता है। यह गद्यांश पाठ्यक्रम की पुस्तकों से अलग अन्य पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं से लिया जाता है। अपठित गद्यांशों का चुनाव अधिकतर इस प्रकार किया जाता है कि वे शिक्षाप्रद हों, इनको पढ़कर विद्यार्थियों की बहुमुखी प्रतिभा का विकास होता हो। इसके साथ ही विद्यार्थियों के बौद्धिक-स्तर, भावग्रहण-शक्ति एवं सामान्य ज्ञान में भी वृद्धि होती हो। ध्यान देने वाली बातें-

* गद्यांश के मुख्य विचारों और शब्दों को रेखांकित कर लेना चाहिए।
* प्रश्नों को पढ़कर उनके उत्तरों पर निशान लगा लेना चाहिए।
* प्रश्नों के उत्तर पढ़कर, समझकर अपनी भाषा में लिखिए।
* गद्यांश का शीर्षक मुख्य भाव के आधार पर संक्षिप्त रूप में एक या दो शब्दों में ही देना चाहिए। अधिकतर शीर्षक प्रारंभ की चार पंक्तियों या अंतिम चार पंक्तियों में मिल जाता है। नीचे दिए गद्यांश को ध्यान से पढ़ो तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखो-

Scanned with CamScanner

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी व्याकरण (अपठित गद्यांश)

DATE 7.10.24
PAGE No. 2

उशीनर-पुत्र हरिभक्त महाराज शिवि बड़े ही दयालु और शरणागत वत्सल थे। एक समय राजा शिवि एक महान यज्ञ कर रहे थे। इतने में भयाक्रांत एक कबूतर राजा के पास आया और उसकी गोद में छिप गया। उसके पीछे उड़ता हुआ एक विशाल बाज वहाँ आया और वह मनुष्य की-सी भाषा में उदार-हृदय से राजा से बोला-"हे राजन! पृथ्वी के धर्मात्मा राजाओं में आप सर्वश्रेष्ठ हैं, पर आज आप धर्म के विरुद्ध कर्म करने की इच्छा कैसे कर रहे हैं ? मैं भूख से व्याकुल हूँ। मुझे यह कबूतर भोजन के रूप में मिला है, आप इस कबूतर के लिए अपना धर्म क्यों छोड़ रहे हैं ?" राजा शिवि ने उत्तर देते हुए कहा-"मैं यह भयभीत कबूतर तुम्हें नहीं दे सकता, क्योंकि तुमसे डरकर यह कबूतर अपनी प्राण-रक्षा के लिए मेरे समीप आया है और जो मनुष्य शरणागत की रक्षा नहीं करते या लोभ, द्वेष अथवा भय से उसे त्याग देते हैं, उनकी सज्जन निंदा करते हैं। भय में पड़े हुए जीवों की रक्षा करने से बढ़कर दूसरा कोई धर्म नहीं है। हे बाज! तुम आहार चाहते हो, मैं तुम्हारे दुःख का भी नाश चाहता हूँ; अतः तुम मुझसे कबूतर के बदले में चाहे जितना और आहार माँग लो।" बाज सोच-विचार कर बोला-"हे राजन्! यदि इस कबूतर पर आपका इतना ही प्रेम है, तो इस कबूतर के ठीक बराबर का तोलकर आप अपना मांस मुझे दे दीजिए।" राजा शिवि ने एक तराजू मँगवाया और उसके एक पलड़े में कबूतर को बैठाकर दूसरे में वे अपना मांस काट-काट कर रखने लगे और उसे कबूतर के साथ तोलने लगे। कबूतर के प्राणों की रक्षा के लिए और बाज की भूख के निवारण के लिए महाराज शिवि अपने शरीर का मांस स्वयं प्रसन्नतापूर्वक काट-काट कर दे रहे थे। अपने सुखभोग की इच्छा को त्याग कर सबके सुख में सुखी होने वाले सज्जन ही दूसरों के दुःख में सदा दुखी हुआ करते हैं। धन्य है त्याग का आदर्श!

तराजू में कंबूतर का वजन मांस से बढ़ता गया। राजा ने संपूर्ण शरीर का मांस काटकर रख दिया, परंतु कबूतर का पलड़ा नीचा ही रहा। तब राजा स्वयं तराजू पर चढ़ गए। राजा शिवि के तराजू में चढ़ते ही नभ से पुष्प-वृष्टि होने लगी। इतने में बाज और कबूतर अंतर्धान हो गए और उनके बदले में दो दिव्य देवता प्रकट हो गए। दोनों देवता इंद्र और अग्नि थे। इंद्र ने कहा-"राजन! तुम्हारा कल्याण हो ! मैं इंद्र हूँ और कबूतर रूप में अग्नि हैं। हम लोग तुम्हारी परीक्षा लेने आए थे। तुमने जैसा दुष्कर कार्य किया है, वैसा आज तक किसी ने नहीं किया। यह सारा संसार मोहमाया कर्मपाश में बँधा हुआ है, परंतु तुम जगत के दुखों से छूटने के लिए करुणा से बँध गए हो। तुमने बड़ों से ईर्ष्या नहीं की, छोटों का कभी अपमान नहीं किया और बराबर वालों के साथ कभी स्पर्द्धा नहीं की, इससे तुम संसार में सर्वश्रेष्ठ हो। संसार में तुम्हारे सदृश अपने सुख की इच्छा से रहित, एकमात्र परोपकार की बुद्धि वाले साधु केवल जगत के हित के लिए पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। तुम दिव्य रूप धारण करके चिरकाल तक पृथ्वी का पालन कर अंत में भगवान के ब्रह्मलोक में जाओगे।"

इतना कहकर इंद्र और अग्नि स्वर्ग को चले गए। राजा शिवि यज्ञ पूर्ण करने के बाद बहुत दिनों तक पृथ्वी पर राज्य करके अंत में दुर्लभ परम-पद को प्राप्त हुए। सत्य है, अपना पेट भरने के लिए तो पशु भी जीते हैं, किंतु प्रशंसा के योग्य जीवन तो उन लोगों का है, जो दूसरों के लिए जीते हैं। विधाता ने आकाश में जल से भरे बादलों को और फल से भरे वृक्षों को परोपकार के लिए रचा है। दुःख में डूबे हुए प्राणियों के दुःख का नाश ही सबसे बड़ा धर्म है। बड़े-बड़े यज्ञों का फल समय पर क्षय हो जाता है, पर भयभीत प्राणी को दिया गया अभयदान कभी क्षय नहीं होता।

प्रश्न

(i) महाराज शिवि कौन थे ? कबूतर महाराज शिवि की शरण में क्यों आया ?
(ii) कबूतर को शरण देना बाज ने अधर्म का कार्य क्यों बताया ?
(iii) महाराज शिवि ने बाज को कबूतर देने से मना क्यों किया ?
(iv) महाराज शिवि के तराजू के पलड़े पर चढ़ते ही कौन-सी विचित्र घटना घटित हुई ?
(v) बाज और कबूतर के रूप में कौन-से देवता थे ? महाराज शिवि को किसने और क्यों संसार में सर्वश्रेष्ठ बताया ?

उपरिलिखित गद्यांश आपके लिए गृहकार्य है। इन प्रश्नों के उत्तर आप अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

(अंतिम पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner